सुवास मसलों
की, विकास
राष्ट्र की

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान

(एक ISO 9001:2015 प्रमाणित संस्थान)

मुख्यालय:

कोषिक्कोड शहर (केरल, भारत) से 11 किमी दूर, कोषिक्कोड-कोल्लीगल नेशनल हाईवे (NH 766) पर एक सुंदर पहाड़ी की चोटी पर स्थित मुख्य कैंपस में संस्थान की प्रमुख प्रयोगशालाएँ और प्रशासनिक कार्यालय स्थित हैं।

विज़न

बढ़ती मांग को पूरा करने और भारत को मसालों के निर्यात में वैश्विक अग्रणी बनाने के लिए मसालों की उत्पादकता बढ़ाना।

मिशन

मसाला क्षेत्र के सभी हितधारकों—जैसे कि प्राथमिक उत्पादक, किसान समूह, उद्योग से जुड़े लोग और सरकारी संस्थान—की सेवा के लिए यह संस्थान लक्ष्य-केंद्रित और विशेषज्ञों द्वारा जांची-परखी (पीयर-रिव्यूड) रिसर्च करेगा, प्रशिक्षित लोगों का एक कुशल समूह तैयार करेगा और तकनीक के प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाएगा। संस्थान अपने कार्यक्रमों, गतिविधियों और सेवाओं में अत्याधुनिक अनुसंधान, नई सोच और वैश्विक नेटवर्किंग को सहजता से शामिल करेगा।

रिसर्च पोर्टफोलियो

स्मार्ट मसाला खेती

मसाला फसलों के उत्पादन तरीकों को आसान बनाने, नुकसान कम करने और पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए भविष्य की तकनीकों को विकसित, कस्टमाइज़ और लागू करना।

स्पाइस जीनोमिक्स का लाभ उठाना

जीनोमिक और पारंपरिक प्रजनन से मिली जानकारी का इस्तेमाल करके बेहतर गुणों वाली मसाला किस्मों को विकसित करना।

व्यावहारिक भोजन और अच्छे उत्पाद के तौर पर मसाले

व्यावहारिक भोजन के तौर पर मसालों की बदलती भूमिका पर ध्यान केंद्रित करना।

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की रणनीतियाँ

खेत से लेकर थाली तक और उसके आगे भी सुरक्षित मसालों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

मसालों पर भविष्योन्मुखी अध्ययन

टेक्नोलॉजी के प्रसार और प्रभाव के रास्तों को समझना,मसाला अर्थव्यवस्था पर असर डालने वाले सामाजिक-आर्थिक, तकनीकी औरसंस्थागत बदलावों की निगरानी करना और उन्हें प्रभावित करना।

संस्थान ने अपनी गतिविधियों और कार्यक्रमों को तैयार करने में वैश्विक दृष्टिकोण अपनाया है। यह दृष्टिकोण देश की प्राथमिकताओं और परिषद के संगठनात्मक विज़न के अनुरूप है। हम अपनी गतिविधियों के दायरे और इन बड़े लक्ष्यों को हासिल करने के बीच एक सार्थक और सुसंगत संबंध बनाने का प्रयास करते हैं।

जनादेश फसलें

- काली मिर्च
- अदरक
- जायफल
- ऑल स्पाइस
- कैसिया
- दालचीनी
- इलायची
- हल्दी
- गार्सीनिया
- पैपरिका
- लौंग
- वानिला

संस्थान की समयरेखा

- **1953** — Spice enquiry report of ICAR
- **1972** — AICRP on Cashew and Spices at CPCRI, Kasaragod, Kerala
- **1975** — Regional Station of ICAR-CPCRI
- **1986** — National Research Centre for Spices
- **1995** — ICAR-Indian Institute of Spices Research

आईआईएसआर प्रायोगिक प्रक्षेत्र

आईआईएसआर क्षेत्रीय केंद्र

कृषि विज्ञान केंद्र

आईआईएसआर प्रायोगिक प्रक्षेत्र :

यह अनुसंधान फ़ार्म पश्चिमी घाट पर्वतमाला की तलहटी में, कोषिक्कोड से 55 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में एक शांत जगह पर स्थित है।

आईआईएसआर क्षेत्रीय केंद्र :

यह केंद्र कर्नाटक के कोडागु ज़िले के मुख्यालय मडिकेरी में स्थित है, जो अपने सुहावने मौसम और हरे-भरे बागानों के लिए जाना जाता है।

कृषि विज्ञान केंद्र:

कृषि विज्ञान केंद्र1992 में स्थापित है और यह कोषिक्कोड ज़िले में नियोजित कृषि विकास और प्रगति में एक अहम कड़ी के तौर पर उभरा है।

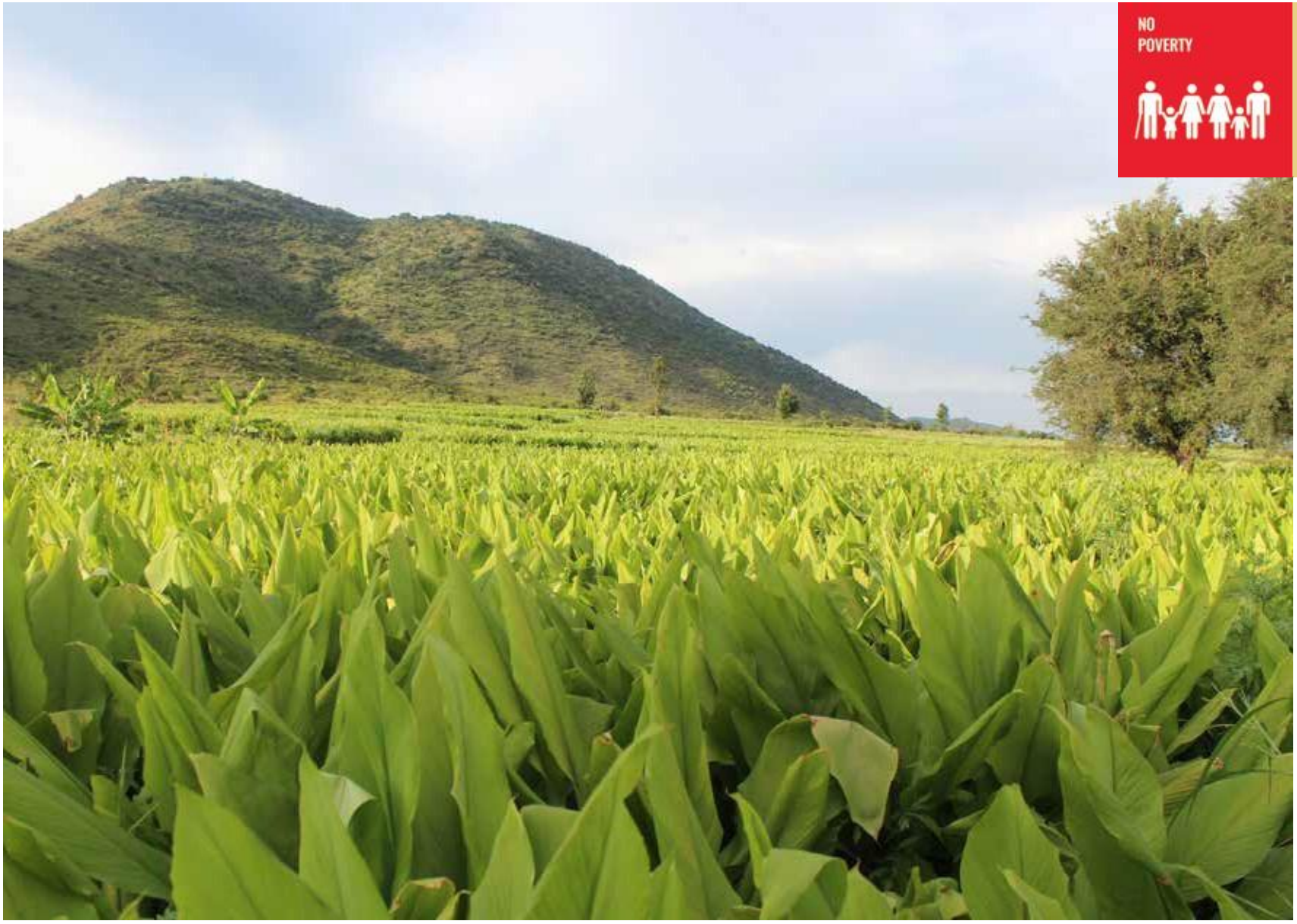
NO
POVERTY

सतत आजीविका के लिए तकनीकें

सस्टेनेबिलिटी और भविष्य की ज़रूरतों के लिए किस्में

संस्थान द्वारा विकसित बेहतर किस्मों में मौजूद जेनेटिक फ़ायदों और खेती व पौधे की प्रतिक्रिया से जुड़े अच्छे गुणों ने मुख्य उत्पादकों को मसाले के उत्पादन की क्षमता बढ़ाने में मदद की है। संस्थान ने अपनी कार्य-योजना बनाते समय मुख्य उत्पादकों, निर्यात क्षेत्र, उद्योग और आम घरों जैसे अलग-अलग पक्षों की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर फसल सुधार की रणनीति अपनाई है। हमारी विविध ज़रूरतों और कृषि-पारिस्थितिकी (agro-ecologies) के अनुकूल अच्छे गुणों, ज़्यादा क्षमता और बेहतर फसल-प्रारूपों (ideotypes) की खोज आधुनिक उपकरणों और सुविधाओं का इस्तेमाल करके जारी है।

मसालों के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल

बायो-इनपुट: ग्रोथ बढ़ाने और जैव-नियंत्रण के लिए PGPR कंसोर्टिया; कवक बीमारियों, कीटों और सूत्रकृमियों के प्रबंधन के लिए ट्राइकोडर्मा, लेकैनिसिलियम सैलिओटे और पोचोनिया का बायो-फॉर्मूलेशन।

डिजाइनर सूक्ष्म पोषक तत्व सूत्र: फ़सल-विशेष संयोजन, जो पोषक तत्वों की कमी को दूर करते हैं और फ़सल की पैदावार व उपज में सूक्ष्म पोषकतत्व की मात्रा को बढ़ाते हैं।

मसालों में गुणवत्ता-घोषित रोपण सामग्री: किसानों को समय पर अच्छी सेहत वाले और रेग-मुक्त रोपण सामग्रियां मिलें, यह मसालों के सफल उत्पादन के सबसे ज़रूरी पहलुओं में से एक है।

लोगों की ज़िंदगी को छूना, आजीविका को बदलना

नई टेक्नोलॉजी को फैलाना और उसे अपनाने में मदद करना,मसाले की खेती करने वाले समुदाय की आजीविका पर बहुत बड़ा असर डाल सकता है। हमारे खास तौर पर तैयार किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम औरमदद देने वाली सेवाओं का मकसद टेक्नोलॉजी में हुई तरक्की का फ़ायदाअपने ग्राहकों तक पहुँचाना है। खेती से जुड़ी सलाह / खेतों में जाकर जाँच-पड़ताल /खास प्रशिक्षण कार्यक्रम/ खेतों में प्रदर्शनी /टेक्नोलॉजी दिखाने वाले कार्यक्रम / डिजिटल पहुँच वाले प्लेटफ़ॉर्म /खास ग्रुप के लिए कार्यक्रम / आने वालों के लिएसुविधाएँ /टेक्नोलॉजी से जुड़े इनपुट पहुँचाना / किसानों की भागीदारी वाले टेक्नोलॉजी परीक्षम /बड़े पैमाने पर संपर्क कार्यक्रम/ खेती में नए प्रयोग करने वाले और प्रगतिशील किसानों की जानकारी रखना /वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम/ मोबाइल ऐप /सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे माध्यम से हम इन तरीकों को संबंधित समुदाय तक पहुँचाते हैं।

ZERO
HUNGER

स्मार्ट मसाला खेती के समाधान

देश में स्मार्ट मसाला खेती प्रणालियों को लाने का हमारा विज़न, मसाला उगाने वाले समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए स्मार्ट समाधान देने की हमारी शोध कोशिशों के अनुरूप है। माइक्रोबियल एनकैप्सुलेशन टेक्नोलॉजी और कई अन्य क्रांतिकारी कदमों - जैसे मसालों के लिए खास सूक्ष्मपोषकतत्व, मसाला खेती के लिए जलवायु एनालॉग की मैपिंग, लक्षित पैदावार के लिए इनपुट ऑप्टिमाइज़ेशन और फर्टिगेशन शेड्यूलिंग - को शामिल करने वाला अनोखा माइक्रोबियल वितरण प्रणाली आधुनिक मसाला खेती प्रणालियों में सबसे उन्नत तकनीक बन गया है। इन समाधानों ने देश भर के मुख्य उत्पादकों की मसालों की खेती से ज़्यादा कृषि-व्यापार आय कमाने की क्षमता को मज़बूत किया है।

LIFE
ON LAND

हमारी मसाला विरासत और जैव विविधता का संरक्षण

मसालों के मामले में भारत की समृद्ध जैव-विविधता हमें मानवता की भलाई के लिए इस अनमोल धरोहर को संरक्षित करने और उसकी सूची बनाने की अहम ज़िम्मेदारी भी सौंपती है। संस्थान की स्थापना के समय से ही, फ़सल सुधार, नई विशेषताओं और औषधीय गुणों की खोज तथा ज्ञान के दायरे को बढ़ाने के लिए उपलब्ध जर्मप्लाज़्म का बेहतर इस्तेमाल करना इसकी मुख्य गतिविधियों में से एक रहा है। समय के साथ, यह संस्थान दुनिया में मसालों के जर्मप्लाज़्म के सबसे बड़े संग्रहों में से एक का संरक्षक बन गया है। जर्मप्लाज़्म संग्रह प्राकृतिक विविधता के भंडार के तौर पर काम करता है और इसका इस्तेमाल वैश्विक मसाला उत्पादन के साझा भविष्य को आकार देने और प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है।

ज़मीनी स्तर पर मसालों के संरक्षण प्रयासों का समर्थन

हज़ारों साल पुराने इतिहास वाले मसालों की खेती को किसानों की ओर से की गई किस्मों के विकास और संरक्षण के प्रयासों से फ़ायदा हुआ है। मसालों की हमारी पारंपरिक किस्में हमारी साझा विरासत का हिस्सा हैं। हम इन किस्मों की पहचान करने, उन्हें संरक्षित करने और उनकी सुरक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, साथ ही यह भी सुनिश्चित करते हैं कि ऐसे प्रयासों के पीछे के लोगों और समुदायों को उनका उचित श्रेय मिले। संस्थान ने काली मिर्च, अदरक, हल्दी और इलायची की किस्मों के पंजीकरण के लिए 'विशिष्टता, एकरूपता और स्थिरता' संबंधी दिशा-निर्देश तैयार किए हैं और इन फ़सलों की DUS परीक्षण के लिए नोडल केंद्र के तौर पर काम करता है।

माइक्रोबियल कल्चर संकलन

माइक्रोबियल विविधता पारिस्थितिक प्रणाली का एक अहम हिस्सा है।यह संस्थान अलग-अलग तरह के पारिस्थितिक प्रणालियोंसे इकट्ठा किए गएमाइक्रोब्स (जैसे कवक, जीवाणु और विषाणु) का एक बड़ा संकलन रखता है।इनमें जैव-नियंत्रण क्षमता, ग्रोथ को बढ़ावा देने औरपोषक तत्व को घुलनशील बनाने जैसे गुण होते हैं। संस्थानफाइटोफ्थोरा स्पीसीस के अलग-अलग तरह के संकलन का एक भंडार बनाए रखता है।इसका मकसद मौलिक और नवीन अनुसंधान करना है,साथ ही फाइटोफ्थोरापर अनुसंधान कार्यक्रम के लिएअसली फाइटोफ्थोरास्ट्रेन उपलब्ध कराना भी है।

जर्मप्लाज़्म संरक्षण केंद्र

मसालों का दुनिया का सबसे बड़ा जर्मप्लाज़्म भंडार: भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान के पास दुनिया कासबसे बड़ा मसालों का जर्मप्लाज़्म संकलन है।काली मिर्च, इलायची, अदरक, हल्दी, लौंग, दालचीनी,वानीला, गार्सीनिया और ऑल-स्पाइस जैसे मसालों केजर्मप्लाज़्म को जर्मप्लाज़्म संरक्षण केंद्र औरइन-विट्रो जीन बैंकों में सुरक्षित रखा जाता है।

GOOD HEALTH
AND WELL-BEING

ज़िंदगी में ज़ायका: खाना, रूप और कार्य

शुरुआती सभ्यताओं के समय से ही, मसालों को प्रतिरोधकता बढ़ाने वाले गुणों के लिए जाना जाता रहा है।मसालों का सेवन कई तरह के स्वास्थ्य लाभों से जुड़ा है, और इनके इस्तेमाल के तरीके पारंपरिक से लेकर खास और कम ज्ञात तरीकों तक फैले हुए हैं।सही जानकारी और समझ के साथ, संस्थान ने मसालों की जैवरासायनिकी, जैवरासायनिक प्रक्रियाओं और न्यूट्रास्युटिकल गुणों से जुड़ी कई उलझन भरी अनिश्चितताओं को स्पष्ट किया है। हमारा मानना है किमसाले, उनमें मौजूद दूसरी उपापचय और अन्य यौगिक, एक समावेशी और एकीकृत स्वास्थ्य और अच्छी प्रबंधन प्रणाली के लिए बहुत कुछ योगदान दे सकते हैं।

मसालों की भाषा को समझना

मसाले इंसानों के लिए अपने खास गुणों वाले रासायनिक मोलिक्यूल के कारण विशेष होते हैं। ये मॉलिक्यूल, कीमती कंपाउंड, काम करने के तरीके और उनके गुण ही एक तरह से मसालों की भाषा हैं। हमने इस भाषा को समझने और इन मॉलिक्यूल और कंपाउंड को पैदा करने वाली मसाला फसलों के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाने में काफी तरक्की की है। हमारे कार्यक्रम पौधों की कोशिकाओं में इनके बनने की जैवरासायनिक प्रक्रिया से लेकर इनके अलग-अलग इस्तेमाल तक, हर पहलू की गहराई से पड़ताल करते हैं।

ज़िंदगियों में नई जान डालना

पिछले कुछ सालों में, इस संस्थान ने मसालों से बने कई स्वास्थ्य और भलाई के उपज को लाने का रास्ता बनाया है। हम नए स्टार्टअप्स और अलग-अलग इनोवेटर्स को भी मसालों से जुड़े नए उत्पाद और एप्लिकेशन के रूपांकन और विकास करने में मदद करते हैं।

हमारे अनुसंधान कार्य ने - जिसमें कीटनाशक अवशेषों की जांच करने वाली अत्याधुनिक सुविधाओं और जैवरासायनिक प्रयोगशालाओं का इस्तेमाल किया गया - आम जनता और शोधार्थियों को मसालों में कीटनाशक अवशेषों की निगरानी की ज़रूरत के बारे में जागरूक करने में अहम भूमिका निभाई है। हमने आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले मसालों में निहित गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

RESPONSIBLE
CONSUMPTION
AND PRODUCTION

सावधानी और समझदारी से कदम बढ़ाना

हम सभी तरह की टेक्नोलॉजी से जुड़ी गतिविधियों में अपने 'फुटप्रिंट' को कम करने की पूरी कोशिश करते हैं। संस्थान द्वारा विकसित सभी टेक्नोलॉजियों में ज़िम्मेदारी से उत्पादन करने की सोच शामिल होती है। यह बात मसालों के उत्पादन और फसलोत्तर प्रसंस्करण में ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल को बेहतर बनाने पर दिए जाने वाले खास ज़ोर से साफ़ तौर पर झलकती है।

मसालों के उत्पादन और प्रसंस्करण में मदद के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का इस्तेमाल

कार्यान्वयन लागत और पर्यावरण की सुरक्षा के लिएमसालों की प्रसंस्करण टेक्नोलॉजी को सोलर एनर्जीपर आधारित करना सही और ज़रूरी है।संस्थान द्वारा लागू किए गए क्रांतिकारी नवीनतम तकनीकीमें सोलर बॉयलर्स और ड्रायर्स का इस्तेमाल करकेमसालों की प्रसंस्करण टेक्नोलॉजी में सोलर एनर्जीके इस्तेमाल को शामिल किया गया है।

जिम्मेदार फसल उत्पादन तरीके

मसालों की खेती और प्रसंस्करण के लिए सबसे बेहतर ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली लाने के मकसद से, हम टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ जोड़ने पर ध्यान देते हैं। संस्थान द्वारा विकसित टिकाऊ और जैविक खेती के तरीकों और इनपुट के सही इस्तेमाल की रणनीतियों को ज़मीनी स्तर पर फैलाया गया है, जिससे मसालों के मुख्य उत्पादक कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में ज़रूरी व्यवहारिक बदलाव आए हैं।

स्वच्छ भारत मिशन

यह संस्थान स्वच्छ भारत अभियान में सक्रिय रूप से शामिल है। इसके तहत आम लोगों, किसानों और छात्रों के बीच जागरूकता फैलाई जाती है, सफाई अभियान चलाए जाते हैं और लोगों को ठोस व तरल कचरे के प्रबंधन के बारे में शिक्षित किया जाता है।

SpiSry

इनोवेशन को बढ़ावा देना: खेत से थाली तक और उससे भी आगे

हम 'स्किल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' अभियानों के साथ सतत विकास लक्ष्यों को जोड़ते हुए, मेहनती युवा उद्यमियों और स्टार्ट-अप्स के साथ काम करते हैं ताकि वाणिज्य में उनके लिए बेहतर जगह बनाई जा सके। हमारे इनक्यूबेटियों और लाइसेंसधारियों को फ़ायदा पहुँचाने के लिए, संस्थान में उनके विचारों को साकार करने में मदद, फसलोत्तर सहायता, उत्पाद विकास प्रयोगशाला, मसाला प्रसंस्करण सुविधा और इनक्यूबेशन सपोर्ट जैसी सुविधाएँ दी जाती हैं।

आईआईएसआर में इनोवेटर सहायक सुविधाएँ

चेलवूर में मसाला प्रसंस्करण सुविधा और उत्पाद विकास प्रयोगशाला; पेरुवण्णामुषी और अप्पंगला में मसाला प्रसंस्करणसुविधाएँ।

स्टार्ट-अप के लिए मदद

यह संस्थान 'संस्थान तकनीकी प्रबंधन – व्यापार योजना एवं विकास इकाई (ITM-BPD)' के ज़रिए स्टार्ट-अप वेंचर, किसानों के समूहों और अलग-अलग तरह के उद्यमियों को पूरी और व्यवस्थित मदद देता है। हमारी सेवाओं से यह पक्का होता है कि हमारे साथ जुड़ने वाले हर बिज़नेस वेंचर को बेहतरीन गुणवत्ता वाले और आगे बढ़ने में मदद करने वाले माहौल मिले।

- व्यापार योजना बनाना
- उपकरणों में मदद
- (मार्गदर्शन
- कानूनी और बौद्धिक संपदा से जुड़ी सलाह
- व्यापार उद्भवन सुविधा

REDUCED INEQUALITIES

विकास में समानता: अछूतों तक पहुँचना

विकास और तरक्की का फ़ायदा सभी को बराबर मिलना चाहिए। हमारी संस्था की सोच में गहराई से बसी इसी भावना ने हमें समाज के उन वर्गों तक पहुँचने के लिए प्रेरित किया है जो सामाजिक और भौगोलिक रूप से पिछड़े हुए हैं।

आदिवासी किसान समुदायों के लिए सहायता

'आदिवासी उप-योजना' के तहत, हमने अपनी लक्षित आबादी के लिए खास और चुनौतीपूर्ण विकास लक्ष्य तय किए हैं। इन लक्ष्यों में उनकी खेती की खास प्रणालियों में मसाला फसलों की संभावनाओं को उनकी कृषि-विकास संबंधी आकांक्षाओं के साथ जोड़ा गया है। इन प्रयासों में आदिवासी किसान समूहों को मूल्यवर्धन के लिए मदद देने से लेकर पोषण सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, खाद्य सुरक्षा और तकनीक के प्रसार जैसी गतिविधियां शामिल हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र का विकास

मसाला फसलों के मामले में, देश के पूर्वोत्तर पहाड़ी (NEH) क्षेत्र में काफी संभावनाएँ छिपी हैं। इस क्षेत्र में हमारे प्रयासों का मकसद इन संभावनाओं को टिकाऊ तरीके से साकार करना है।

- बीज ग्राम बनाना
- रोपण सामग्रियों का प्रवर्धन
- मूल्य श्रृंखला से जुड़े उपाय

महिला किसानों के समूह और महिलाओं के मालिकाना हक वाले वाणिज्यिक उद्यम, हमारी हैंडहोल्डिंग सेवाओं के लिए एक खास लक्षित दल के तौर पर अहम स्थान रखते हैं।

QUALITY
EDUCATION

ज्ञान की साझा, विशेषज्ञता को बढ़ावा

मसालों के क्षेत्र में अनुसंधान से जुड़े सवालों को वैज्ञानिक तरीके से हल करने में माहिर, प्रशिक्षित लोगों का लगातार मिलना, एक जीवंत रिसर्च माहौल बनाए रखने के लिए बहुत ज़रूरी है। इसी समझ ने हमें अलग-अलग तरीकों से अकादमीय समुदायों के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया है। जहाँ हम भविष्य के शोधार्थियों को तैयार करने और उन्हें मार्गदर्शन देने में काफी मेहनत और संसाधन लगाते हैं, वहीं हम इस समय को देश में मसालों पर होने वालेअनुसंधान के भविष्य को संवारने में लगा हुआ अच्छा समय भी मानते हैं।

ज्ञान और कौशल को जगाना

यह संस्थान अपने छात्रों को अनुसंधान कार्यक्रम में मार्गदर्शन देने के लिए अपनी प्रयोगशालाएं और सुविधाओं का इस्तेमाल करने का एक खास मौका देता है। देश के कई विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों ने संस्थान के अकादमीय मार्गदर्शन कार्यक्रम का लाभ उठाया है।

- डॉक्टरेट की पढ़ाई
- ग्रीष्मकाली प्रशिक्षण
- एमएससीशोधकार्य
- पेशेवार प्रशिक्षण
- पोस्ट-एम एससी प्रशिक्षण
- छात्रों के लिएआउटरीच गतिविधि

शिक्षा में सहयोगी

- 38 राज्य कृषि विश्वविद्यालय
- 5 कृषि विश्वविद्यालयों के साथ MoU
- 5 गैर-कृषि विश्वविद्यालयों के साथ MoU

प्रगति में साझेदार

समय के साथ, हमने कई ऐसे संस्थानों के साथ हाथ मिलाया है जिनकी क्षमताएं साबित हो चुकी हैं। इन साझेदारों में सरकारी फंड से चलने वाले संस्थान, व्यावसायिक सहयोगी संस्था, शैक्षणिक संस्थान, एनजीओ और विकास अभियंताएं शामिल हैं। ये हमारे मुख्य कौशल को और बेहतर बनाते हैं और हमारे कामों की असरदारता बढ़ाने में मदद करते हैं। इन सबके तालमेल से, हम मसालों के क्षेत्र में एक अहम भूमिका निभाने वाले और देश में मसाला फसल रिसर्च से जुड़े सभी मामलों में ज़रूरी मदद देने वाले मुख्य संस्थान के तौर पर उभरे हैं।

अखिल भारतीय समन्वित मसालाअनुसंधान परियोजना

यह 1971 में शुरू हुई। भाकृअनुप- अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना (आईसीएआर-एआईसीआरपीएस)देश का सबसे बड़ा मसाला अनुसंधान नेटवर्क है जो मसालों पर देशव्यापीसहयोगात्मक और अंतर-विषयक अनुसंधान करता है। एआईसीआरपीएस, जो आईसीएआर प्रणाली को राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और केंद्रीय संस्थानों से जोड़ता है, का मुख्यालयआईसीएआर-आईआईएसआर, कोषिक्कोड में स्थित है।

अंतर्राष्ट्रीय काली मिर्च समुदाय (आईपीसी)

स्पाइसेस बोर्ड

सुपारी और मसाला विकास निदेशालय

राज्य कृषि विश्वविद्यालय

आईसीएआर के अन्य संस्थान

अखिल भारतीय मसाला निर्यात फारम

विश्व मसाला संगठन

भारतीय मसाला समिति

केरला स्टार्टअप मिशन | सहकारी समितियां | अग्रि इन्नोवेट

किसान उत्पादक संगठन

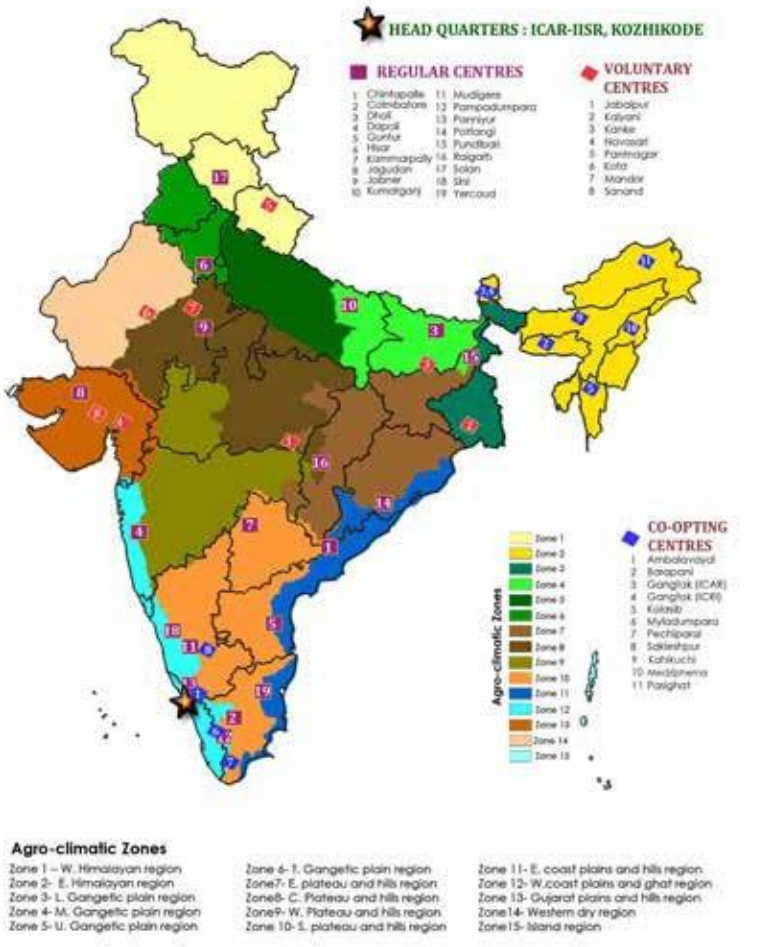

PARTNERSHIPS
FOR THE GOALS

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान
मेरिकुन्नु पी.ओ., कोषिक्कोड (कालीकट), केरल, भारत। पिन: 673012
दूरभाष: 0495-2731410, फैक्स: 0495-2731187 | वेबसाइट: spices.res.in

IISRCalicut
@icar_spices
iisrcalicut